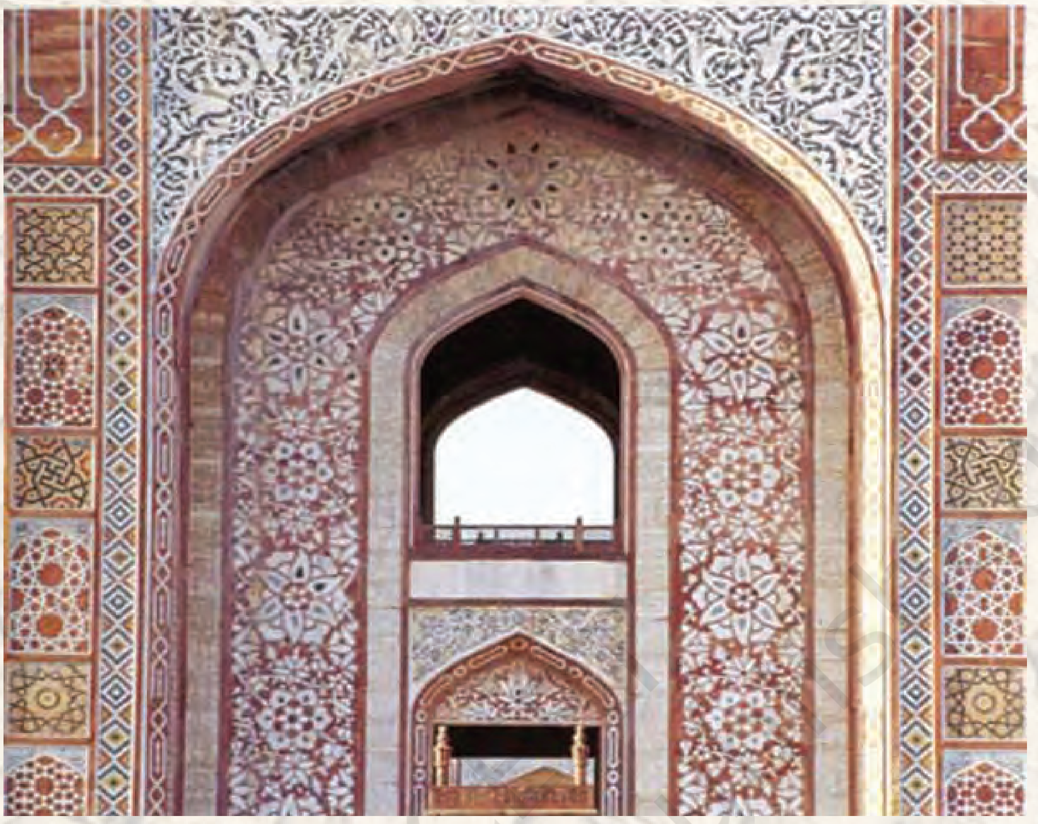

ताजमहल में मध्यकालीन भारत की विकासात्मक वास्तु प्रक्रिया अपनी पराकाष्ठा पर पहुंच गई। इसके संरचनात्मक और अलंकरणात्मक, दोनों ही प्रकार के तत्वों में मुगलों द्वारा हिंदुस्तान लाए गए व यहां पहले से उपस्थित तथा शाहजहाँ व उसके वास्तुकारों द्वारा ताज के लिए परिकल्पित, सभी प्रकार के प्रभावों का संगम दिखाई देता है।

ताजमहल की भव्यता व शालीनता, उसकी आडंबरहीन तथा सरल योजना व उठान, उसके विभिन्न अंगों के बीच समानुपात एवं सुडौलता, संगमरमर के प्रयोग, यमुना नदी के किनारे उसकी स्थिति और ऊँचे आकाश में खड़ी उसकी भव्य इमारतों के कारण आती है। ताज की गरिमा दिन और रात के अलग-अलग समयों पर अलग-अलग रंगों का आभास कराती है।

ताजमहल को शाहजहाँ ने अपनी बेगम मुमताज महल की याद में एक मकबरे के तौर पर बनवाया था। इसके संपूर्ण परिसर में अनेक छोटे-बड़े भवन, कक्ष, बाग-बगीचे हैं। यह यमुना नदी के दाहिने किनारे पर स्थित है। अनुसंधानकर्ताओं ने पता लगाया है कि ताज के पीछे यमुना के बाएं किनारे पर भी पहले कभी एक बाग था जिसे माहताब बाग कहा जाता था।

ताज के विशाल परिसर में प्रवेश पाने के लिए लाल पत्थर से बने एक विशाल द्वार से होकर गुजरना पड़ता है। यह दरवाजा बहुत सुंदर है। मकबरा चारबाग शैली में बना है जिसमें फव्वारे और पानी के बीच से रास्ता है। मकबरे की इमारत को बाग के बीचोबीच न बनाकर उत्तरी किनारे पर बनाया गया है ताकि नदी तट की सुंदरता का लाभ उठाया जा सके।

बाग के बीचोबीच स्थित सीधा मार्ग आगंतुक को मकबरे के निचले हिस्से तक पहुंचा देता है। वहीं से मकबरे के फर्शी चबूतरे पर पहुंचा जाता है। चबूतरे के किनारों पर चार मीनारें खड़ी हैं जो ऊपर की ओर पतली होती जाती हैं। इन मीनारों की ऊंचाई 132 फुट है। इमारत के मुख्य भाग की चोटी पर गोलाकार गुंबद है और चार गुमटियां हैं जो सुंदर नम रेखा बनाती हैं। इमारत की कुर्सी, उसकी दीवारें और गुंबद तथा गुमटियों के बीच पूर्ण समानुपात है। सफेद संगमरमर जड़ी कब्रगाहों के पश्चिम की ओर एक लाल बलुआ पत्थर से बनी मस्जिद है और संतुलन बनाए रखने के लिए पूर्व में भी एक ऐसी ही इमारत बनी हुई है। इमारत के लिए संगमरमर राजस्थान में स्थित मकराना की खानों से खोदकर लाया गया था और मकबरे का यह सफेद संगमरमरी भवन आस-पास लाल बलुआ पत्थर से बनी हुई इमारतों से बिलकुल विपरीत दृश्य प्रस्तुत करता है।

मकबरे की इमारत वर्गाकार है और इसके खांचे आठ बगलें/साइडें बनाते हैं। उनके बीच गहरी चापें हैं। ये संरचनात्मक विशेषताएँ संपूर्ण इमारत के उठाव में भिन्न-भिन्न सतहों, छायाओं, रंगों आदि का आभास उत्पन्न करती हैं। इमारत की ऊँचाई फर्श से छत तक 186 फुट और छत से शिखर के फगूरों तक भी 186 फुट है।

मकबरे के भीतरी भाग में नीचे तलघर और उस पर मेहराबदार अष्टभुजी विशाल कक्ष हैं और प्रत्येक कोण पर कमरा बना है और ये सब गलियारों से जुड़े हैं। इमारत के हर हिस्से में रोशनी जाली-झरोखों से आती है जो भीतरी मेहराबों के आस-पास बने हुए हैं। छत की ऊँचाई बाहरी दरवाजे जितनी ही है और दो गुम्बदों के कारण बीच में जगह छूटी हुई है। ताजमहल की सुंदरता में वृद्धि करने के लिए उसकी भीतरी और बाहरी सतहों पर चार तरह के अलंकरणों या साज-सज्जाओं का प्रयोग किया गया है। इसकी दीवारों पर पत्थर को उकेरकर ऊँची और नीची उभारदार नक्काशी की गई है। जाली-झरोखों में जड़े संगमरमर में बारीक या सुकोमल नक्काशी की हुई है। दीवारों और मकबरे के पत्थरों पर पीले संगमरमर, जेड और जैस्पर की जड़ाई का काम किया हुआ है और साथ ही कहीं-कहीं चोपड़ पच्चीकारी के साथ ज्यामितीय डिजाइनें बनी हुई हैं। अंत में, सफेद संगमरमर पर जैस्पर की जड़ाई के द्वारा कुरान की आयतें लिखी गई हैं। इस सुंदर लिखावट से दीवारों की सुंदरता में चार चांद लग गए हैं और अल्लाहताला से सतत् संबंध जुड़ गया है।

गोल गुम्बद

गोल गुम्बद कर्नाटक के बीजापुर जिले में स्थित है। यह गुम्बद बीजापुर के आदिलशाही राजवंश (1489–1686 ई.) के सातवें सुल्तान मुहम्मद आदिलशाह (1626–56 ई.) का मकबरा है। इसे स्वयं सुल्तान ने अपने जीवन काल में बनवाना शुरू किया था। इसका काम पूरा न होने के बावजूद यह एक शानदार इमारत है। मकबरे में कई छोटी-बड़ी इमारतें हैं, जैसे—भीतर आने के लिए विशाल दरवाजा, एक नक्कारखाना, एक मस्जिद और एक सराय जो दीवारों से घिरे एक बड़े बाग के भीतर स्थित हैं।

गुम्बद एक विशाल वर्गाकार भवन है जिस पर एक गोलाकार ढोल है और ढोल पर एक शानदार गुम्बद टिका हुआ है जिसके कारण उसे यह नाम दिया गया है। यह गहरे स्लेटी रंग के बेसाल्ट पत्थर से बना है और इसे पलस्तर से संवारा गया है। गुम्बद की इमारत की हर दीवार 135 फुट लंबी, 110 फुट ऊँची और 10 फुट मोटी है। ढोल और गुम्बद दोनों को मिलाकर इस इमारत की ऊँचाई 200 फुट से भी ऊँची चली जाती है। मकबरे का एक वर्गाकार बड़ा कक्ष है और 125 फुट व्यास वाला गुम्बद है। यह मकबरा 18,337 वर्ग फुट में फैला हुआ है और दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा मकबरा है।

मकबरे के बड़े कक्ष में सुल्तान, उसकी बेगमों व रिश्तेदारों की कब्रगाह हैं और उनकी असली कब्रें नीचे तहखाने में हैं। तहखाने में उतरने के लिए सीढ़ियाँ बनी हैं। वर्गाकार आधार पर बना अर्धगोलाकार गुम्बद बगली डाट के सहारे बनाया गया था। इन बगली डाटों ने गुम्बद को तो आकार दिया ही, साथ ही उसके भार को नीचे की दीवारों पर डाल दिया। बगली डाटों में चाप-जालियों (आर्चनेट्स) या तारकाकार रूपों वाली प्रणालियाँ बनी हुई हैं जिनसे प्रतिच्छेदी चापों द्वारा बने कोण ढक जाते हैं।

इस इमारत में एक आश्चर्यजनक ध्वनि-प्रणाली है। गुम्बद के ढोल के साथ-साथ एक फुसफुसाहट दीर्घा (व्हिस्परिंग गैलरी) बनी हुई है जहां धीरे से धीरे बोली गई या फुसफुसाई गई आवाज कई गुना तेज हो जाती है और उसकी प्रतिध्वनि कई बार गूंजती है।

इमारत के चारों कोनों पर सात मंजिली अष्ट भुजाकार मीनारें बनी हैं। ये मीनारें ऊपर गुम्बद तक पहुंचने के लिए सीढ़ियों का काम भी देती हैं। गुम्बद का ढोल बेलबूटों से सजा हुआ है। इमारत के मुहार (मुख भाग) की विशिष्टता यह है कि परकोटे के नीचे भारी ब्रैकेटों वाली कार्निस बनी हुई है। यह कार्निस अत्यंत उत्कीर्णित पत्थर के टोड़ों पर टिकी हुई है जो दीवार से आगे 10 फुट तक निकले हुए हैं। कार्निस मुंडेर को सहारा देती है जिसमें अनेक चापदार झरोखे और पत्ती की शक्ल वाली दीवारें हैं।

गोल गुम्बद मध्य कालीन भारत में प्रचलित अनेक वास्तु शैलियों का सुंदर संगम है। स्मारकीयता, विशालता व भव्यता, सब बीजापुर के इन भवनों में पाई जाती हैं। इसके गुम्बद, मेहराबों, ज्यामितीय अनुपातों व भारवाही तकनीकों जैसी संरचनात्मक विशेषताओं से ऐसा प्रतीत होता है कि इसमें तिमूरी व फारसी शैलियों को अपनाया गया है। लेकिन इसके निर्माण में स्थानीय सामग्री लगी है और यह दक्कन में लोकप्रिय फर्शी सजावटों से सजा है। किनारों पर बनी चार मीनारें उन बुर्जों के अवशेष हैं जो मस्जिदों के साथ लगी हुई थीं, जैसा दिल्ली के पुराने किले की किला-इ-कुहना मस्जिद में दिखता है।

गुम्बद का ढोल

फुसफुसाहट दीर्घा

जामा मस्जिद, दिल्ली

जामा मस्जिद

मध्य कालीन भारत में स्थान-स्थान पर अनेक बड़ी-बड़ी मस्जिदें बनाई गईं जहां नमाज़ आदि के लिए विशाल आँगन थे। यहां हर जुम्मे (शुक्रवार) को दोपहर बाद नमाज पढ़ने के लिए नमाज़ियों की भीड़ जमा होती थी। ऐसी सामूहिक नमाज़ के लिए कम से कम 40 मुस्लिम वयस्क पुरुषों का इकट्ठा होना जरूरी था। शुक्रवार को नमाज़ के समय शासक के नाम में एक खुतबा को पढ़ा जाता था और आम प्रजा के लिए बनाए गए उसके कानूनों को पढ़कर सुनाया जाता था। मध्य काल में, एक शहर में एक जामा मस्जिद होती थी जो अपने नज़दीकी परिवेश के साथ-साथ आम लोगों यानी मुस्लिम और गैर-मुस्लिम दोनों संप्रदायों के लोगों के लिए जीवन का केंद्र-बिंदु थी। इसका कारण यह था कि यहां धार्मिक और अप्रत्यक्ष रूप से राजनीतिक गतिविधियों के साथ-साथ वाणिज्यिक और सांस्कृतिक आदान-प्रदान भी बहुत होता था। आमतौर पर ऐसी मस्जिद काफी बड़ी होती थी, उसमें एक खुला सहन होता था जो तीन तरफ से ढके हुए रास्तों (इबादत घरों) से घिरा हुआ होता था और उसमें पश्चिम की ओर क़िबला लिवान होता था। यहीं पर इमाम के लिए मेहराब और मिमबर बने होते थे। नमाजी अपनी इबादत (प्रार्थना) पेश करते समय मेहराब की ओर ही अपना मुंह रखते थे क्योंकि यह मक्का में काबा की दिशा में होती थी।

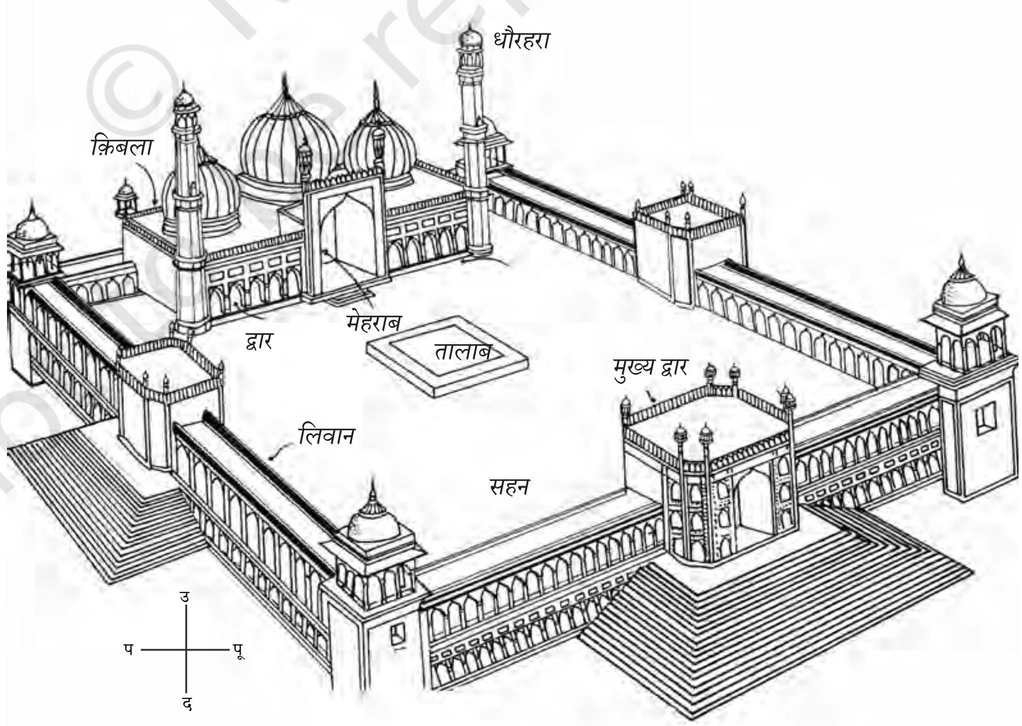

जामा मस्जिद का रेखा-चित्र

© NCERT not to be republished

अभ्यास

1. आप इण्डो-इस्लामिक या इण्डो-सारसेनिक शब्दों से क्या समझते हैं? क्या आप इस शैली के लिए किसी दूसरे नाम का सुझाव दे सकते हैं?
2. तेरहवीं शताब्दी में भारत में भवन निर्माण के कौन-से नए प्रकार अपनाए गए?
3. इण्डो-इस्लामिक वास्तुकला की चार श्रेणियों का उल्लेख करें?
4. मध्य कालीन भारत में किले का क्या महत्व होता था? शत्रुओं को भरमाने या हराने के लिए किलों में क्या-क्या सामरिक उपाय अपनाए जाते थे?
5. इण्डो-इस्लामिक वास्तुकला का उद्भव और विकास कैसे हुआ?
6. मांडु इस तथ्य को कैसे उजागर करता है कि मानव अपने आपको पर्यावरण के अनुरूप ढाल लेते हैं?
7. अपूर्ण होते हुए भी गोल गुम्बद को इण्डो-इस्लामिक वास्तुकला का भव्य एवं अनूठा प्रतीक क्यों माना जाता है?
8. मकबरा और दरगाह, कुछ ऐसे स्थान हैं जहां मृतकों को दफनाया जाता है। इन दोनों में क्या अंतर है? क्या आप किसी मृतक व्यक्ति के किसी स्मारक के बारे में जानते हैं?
9. 'पूर्णता' शब्द ताजमहल के साथ जोड़ा जाता है। क्यों?

परियोजना

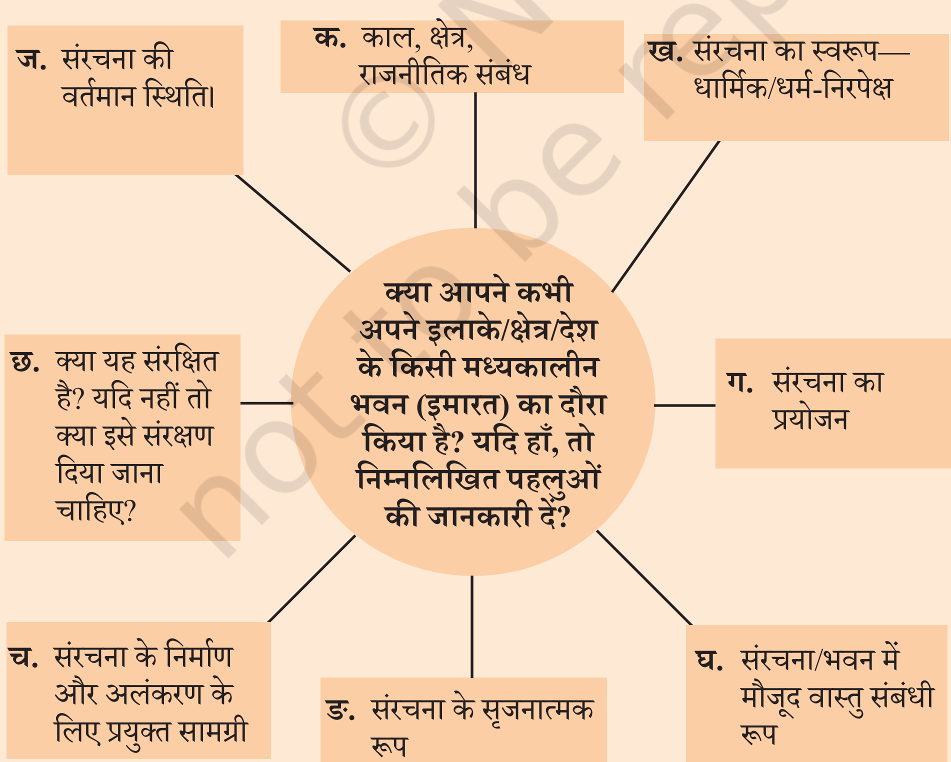

© NCERT not to be republished

शब्दावली

अण्ड	अर्धगोलाकार गुम्बद यह आमतौर पर बौद्ध-स्तूप संरचना में प्रयोग किया जाता है।
अरबस्क	लाइनों, पत्तियों और फूलों वाली सजावटी डिज़ाइन जो इण्डो-इस्लामिक वास्तुकला की विशेषता है।
अरबी शैली	पश्चिम एशियाई देशों में मुस्लिमों का लोकप्रिय स्थापत्य जो ग्यारहवीं से चौदहवीं शताब्दी तक प्रचलित था।
अर्धमण्डप	गर्भगृह के सामने स्थित अर्धमण्डप।
अलंकृत पच्चीकारी	दीवारों और फर्श पर की गई सुंदर सजावट।
अवदान	बौद्ध साहित्य से जुड़ा जीवन घटनाओं तथा अच्छे कर्मों के लिए प्रयुक्त नाम।
अष्टदिक्पाल	आठ दिशाओं के रखवाले।
आधिपत्य	वह शासन जिसका दूसरे राज्यों पर किसी न किसी प्रकार का आधिपत्य हो, जो आंतरिक रूप से स्वायन्त: हो।
आमलक	धारीदार आँवले के फल जैसे आकार वाला शिखर जो प्राय: उत्तर भारतीय मंदिरों के शिखर के शीर्ष पर बनाया जाता है।
आयुध	शस्त्र।
ईसा पूर्व	सामान्य युग से पहले।
कलश	चौड़े मुँह वाला पात्र; मंदिर के शिखर पर सजावटी कलश/मटके का आकार।
कार्निस	नीचे सजावट के लिए दीवार पर उभारी गई पट्टी।
क़िबला लिवान	मक्का की दिशा में स्थित मस्जिद की दीवार।
किला-ए-कुहान मस्जिद	दिल्ली के पुराना किला स्थित शेरशाह सूरी अथवा हुमायूँ द्वारा निर्मित मस्जिद।
कीलाकार	मेहराब बनाने हेतु कील/खूँटे के आकार वाला पत्थर।
कुण्डली	घुमावदार अलंकृत खम्भा।
कूट	वर्गाकार योजना वाला मंदिर।
कोस मीनार	मीनार के आकार का मील का पत्थर।
गर्भगृह	मंदिरों के अन्दर का वह हिस्सा जहाँ अधिष्ठाता की मूर्ति स्थापित होती है।
गहपति	बड़ी भूमि का मालिक या बड़ा किसान जो खेती और व्यापार में शामिल है।
गोपुरम्	मन्दिर का मुख्य प्रवेश द्वार।
चकमक पत्थर	काले या गहरे भूरे रंग का एक पत्थर जिसका पोत चिकना नहीं है।
चक्र	बौद्ध संप्रदाय के पूजा का चक्र/पहिया।

© NCERT not to be republished

चतुरस्त्र वर्गाकार।

चारबाग वर्गाकार भागों में पानी के चैनलों से अन्तर्विभाजक चार भागों में विभाजित उद्यान।

चैत्य का मेहराब ऊपर की ओर केंद्र में उठाई टिप के साथ अर्द्ध परिपत्र चाप।

छत्र छाते की आकृति वाला स्तूप शीर्ष।

छत्री चार स्तंभों पर रखी हुई एक गुम्बद या पिरामिड के आकार की छत।

छेनी नुकीली या आड़ी धारी वाला पत्थर जिसे हड्डी, सींग और हाथी दांत पर उत्कीर्णन के लिए प्रयुक्त किया जाता है।

जगमोहन मुख्य मंदिर के सामने आयताकार या वर्गाकार मण्डप (यह ओडिशा वास्तुकला की शैली है)।

जातक गौतम बुद्ध के जन्म के बारे में मानव और जानवर दोनों के रूपों में उल्लिखित एक साहित्य।

टेम्पेरा यह एक स्थायी तथा रंगीन पदार्थ है जो पानी में घुलनशील होता है।

डैडो पैनल दीवार के आंतरिक निचले हिस्से से पृथक वह हिस्सा जो जमीन से लगा होता है। इसके कुछ उत्तम उदाहरण होयसाल मंदिर (हलेबिड), जमाली कमली का महरौली स्थित मकबरा और आगरा के निकट फतेहपुर सीकरी का तुर्की सुल्तान का महल हैं।

तारकीय योजना मेहराब की जालियाँ, जिन्हें इस प्रकार बनाया जाता है कि उनमें तारों के आकार का विकिरण दिखाई देता है।

तिपतिया तीन घुमाव वाला मेहराब।

तीर्थंकर जैन धर्म के आध्यात्मिक उपदेशक/गुरु।

तोरण दरवाजे पर लगा नक्काशीदार, सर्पाकार तोरण जिसे समारोहों के अवसर पर लगाया जाता है।

त्रिपुरांतक शिव शिव को धनुष और तीर चलाने वाले हथियारों के साथ चित्रित किया गया है, परंतु पिनाकपाणि से अलग।

द्रविड़ दक्षिण भारतीय लोग; संस्कृति; भाषा एवं स्थापत्य।

धर्मचक्रप्रवर्तन भगवान बुद्ध द्वारा वाराणसी के निकट सारनाथ में दिया गया पहला प्रवचन जिससे धर्म रूपी चक्र का आरंभ हुआ।

नक्कारखाना नगाड़ा बजाने के लिए बना कमरा जो प्राय: किले अथवा महल के मुख्य द्वार से लगा होता था। मुगलकालीन महलों का यह एक मुख्य हिस्सा था।

नागर उत्तरी भारत के मंदिरों की स्थापत्य शैली।

नाट्यमण्डप अथवा रंगमण्डप मंदिर के अग्र-भाग स्थित सभागार जहाँ नृत्य किया जाए।

पंचायतन चारों कोनों पर स्थित छोटे मंदिरों के मध्य बना मुख्य मंदिर।

पठान स्थापत्य दिल्ली के खिलजी शासक जोकि अफगान माने जाते थे, उनके द्वारा निर्मित स्थापत्य शैली।

© NCERT not to be republished

पदक स्वरूप	आकृतियाँ या सुलेख से सजे गोलपदक के समान दिखने वाले मेहराब।
पिएत्रा-द्यूरा	अर्द्ध कीमती पत्थरों के प्रयोग से बना मोसैक (पच्चीकारी का काम) जो ताजमहल में दीवारों, छत्रियों और संगमरमर पर देखने को मिलता है।
पेन्डेन्टिव	दो दीवारों के मध्य एक त्रिकोणीय कोष्ठक, जो गुम्बद के आधार तल से मेहराब को सहारा देता है।
प्रदक्षिणा	परिक्रमा।
प्रमुख पत्थर	मेहराब के शिखर पर रखा एक केंद्रीय पत्थर।
फंसना	आम तौर पर मंडप के ऊपर या शिखर पर बनी प्रतिकृतियाँ।
फलक	एक निश्चित आकार का एक पैनल या उसके समान एक शिलालेख या चित्र।
फिरोज़ा	आसमानी अथवा हल्के हरे रंग का अर्ध-मूल्यवान पत्थर जिसे अनेक प्राचीन कालीय अलंकारों में लगाकर बहुमूल्य बनाया गया।
फेयन्स	विभिन्न नीले रंग की नकली कांच जैसी वस्तु जिसका प्रयोग आभूषणों की सज्जा के लिए किया जाता है।
फ्रेस्को	भित्ति चित्रकारी के प्रयोग में लाया जाने वाला गीले चूने का प्लास्टर।
बंग	बंगाल का पुराना नाम।
बहुरंगी	वह वस्तु जिस पर विभिन्न रंगों की सज्जा/कारीगरी की गई हो।
बिल्लौर	विश्व के विभिन्न भागों में पाया जाने वाला बिल्लौर पत्थर जिसे औज़ार बनाने एवं समारोहों में प्रयोग में लाया जाता था। इसकी विभिन्न किस्में पायी जाती हैं।
बौद्ध धर्म	गौतम बुद्ध द्वारा प्रतिपादित धर्म जो ईसा पूर्व छठवीं शताब्दी में उत्पन्न हुआ।
बोधिसत्व	बौद्ध धर्म में बोधिसत्व से तात्पर्य महात्मा बुद्ध के पूर्व जन्मों से है।
भित्ति-चित्र	दीवार गुफ़ाओं, इमारतों अथवा मंदिरों की दीवार पर फ्रेस्को या किसी अन्य शैली में की गई चित्रकारी।
मकबरा	मृतकों को दफनाये गए स्थल की इमारत।
मण्डप	सभागार।
महापरिनिर्वाण	भगवान बुद्ध की मृत्यु अथवा निर्वाण (जीवन और मृत्यु के चक्र से मुक्ति)।
महामण्डप	मंदिर के अग्र-भाग में स्थित मण्डप अथवा सभागार।
मिमबर	जिस पर मस्जिदों में खुतबा पढ़ा जाता है।
मिहराब/मेहराब	प्रार्थना गृह जो मक्का की ओर इंगित करता है।
मुखलिंग	लिंग जिस पर मुखाकृति हो।
मृण्मूर्ति	मिट्टी की बनी मूर्ति जिसे सूखने के बाद आग में पकाया जाता है जिसके बाद वह लाल रंग की हो जाती है।
मेड़ी	गोलाकार नली।

© NCERT not to be republished

यक्ष/यक्षिणी	प्राकृतिक संसाधन एवं प्रकृति का संरक्षण करने वाले।
रूपकार	कलाकार।
लाजवर्द मणि	नीला अर्द्ध कीमती पत्थर। प्राचीन काल में इसका मुख्य स्रोत उत्तरी अफगानिस्तान में बदाक्षन के पहाड़ों में था, जहां से व्यापक रूप से इसका कारोबार होता था। लाजवर्द मणि का इस्तेमाल आभूषणों, मुहरों आदि में जड़कर किया जाता था।
लिंग	भगवान शिव की लिंग के रूप में पूजा की जाती है।
लेखाप्रसाद	उस शैली के मंदिर जिनमें शिखर का आधार चौकोर होता है जिसके फलक ऊपर की ओर जाते-जाते अन्दर की ओर तिरछे होते जाते हैं।
वज्रयान	बौद्ध धर्म से उत्पन्न तांत्रिक प्रक्रिया वाला वाद।
वर्ण	प्राचीन काल में व्यवसाय पर आधारित चार वर्गों (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य एवं शूद्र) में विभाजित समाज।
वलभी	नागर शैली के मन्दिरों की एक श्रेणी।
विमान	दक्षिण भारतीय मंदिरों के गर्भ के ऊपर का शिखर।
विहार	वह स्थान जहाँ बौद्ध साधु रहते थे।
वेसर	कर्नाटक के चालुक्य शासकों के समय बने मंदिरों की स्वतंत्र शैली जिसमें उत्तर (नागर) एवं दक्षिण (द्रविड़) भारतीय शैलियों का मिश्रण था।
श्रमण	बौद्ध अथवा जैन संप्रदाय के वे लोग जो एक स्थान से दूसरे स्थान पर घूमते थे।
शिखर	उत्तर भारतीय शैली के मंदिरों का शिखर जो गर्भगृह के ऊपर होता है।
शिल्पशास्त्र	भारतीय कला एवं स्थापत्य के नियमों एवं तत्वों का वर्णन करने वाले ग्रंथ, शिल्पशास्त्र कहलाते थे।
शिल्पी	कलाकार।
संकुचित स्थान	वर्गाकार कमरे के चारों तरफ का मेहराब जिस पर गुम्बद टिकता है।
सभा मण्डप	सभागार।
सराय	वह स्थान जहाँ राहगीर रुक सकें।
साम्राज्यवादी	पूर्णतया स्वाधीन रूप से शासन करने वाला प्राधिकारी।
सूर्यकांतमणि	बिल्लौर पत्थर की एक किस्म जो लाल, पीली या भूरी हो सकती है। लंबे समय से इसका प्रयोग आभूषण और अलंकरण के लिए इस्तेमाल किया जाता रहा है।
सुलेखन	सजावटी लिखावट की कला।
सेलखड़ी	धूसर अथवा हरे से रंग का पत्थर जो मुलायम होता है और जिससे आकृतियाँ, बर्तन, मुहरें और अन्य वस्तुएँ बनायी जा सकती हैं।
स्कन्ध	मेहराब के बाहरी घुमाव पर एक चौकोर घेरे के बीच की तिकोनी जगह।
स्टक्को	दीवार तथा सजावट के लिए प्रयोग किया जाने वाला अच्छा प्लास्टर।

© NCERT not to be republished

स्तूप	बौद्ध संप्रदाय के लोगों द्वारा पूज्य वह अण्डाकार संरचना जिसमें बुद्ध के अवशेष रखे हों।
स्थापति	वास्तुकार।
स्फटिक	एक उच्च गुणवत्ता वाला पारदर्शी, रंगहीन शीशे जैसा पदार्थ जिसके अलंकृत पात्र एवं आभूषण बनाए जाते हैं।
हमाम	तुर्की शैली में बना स्नान गृह।
हर्मिका	अर्ध वृत्तीय स्तूप के गुंबद पर छोटे वर्गाकार बाड़ लगाना।

© NCERT not to be republished

टिप्पणी

© NCERT
not to be republished

टिप्पणी

© NCERT
not to be republished